PHILOSOPHY

PG, Paper-VIII (Hons, Paper-I & VIII)

Concept of God (Nyaya and Yoga)

न्याय और योग में ईश्वर

Dr. S.K. Singh
Mob-9431449951

(B) योग दर्शन में ईश्वर :-

→ पातंजल योग सांख्य के पच्चीस तत्वों के अतिरिक्त ईश्वर की भी सत्ता स्वीकार करता है इसलिये इस दर्शन को 'सेश्वर सांख्य' भी कहा जाता है।

→ महर्षि पतंजलि के अनुसार - 'क्लेशकर्मविपाकाशैः यः अपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः', अर्थात् अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश - इन पाँच क्लेशों से, पुण्य और पाप कर्मों से उत्पन्न जाति, आयु तथा भोगरूप फलों से, उनसे उत्पन्न वासनाओं से असंपृष्ट सदा मुक्त पुरुष विशेष ईश्वर है।

→ ईश्वर देश-काल की सीमाओं से परे, भोगों से स्वतंत्र तथा अनन्त अनन्तप्रभुत्वशक्तिसंपन्न है। उनमें ज्ञानशक्ति, इच्छाशक्ति और क्रियाशक्ति - ये तीनों निरतिशयता में हैं, जबकि अन्यत्र (अल्पपुरुष में) सातिशयता में। वे सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान हैं, उसके समान और उससे अधिक गुणसंपन्न कोई दूसरा नहीं है। वह कपिल आदि गुरुओं का भी गुरु है, 'परमगुरु' है।

→ श्रुति आदि ग्रंथों में ईश्वर ओंकार (ॐ) के नाम से पुकारा जाता है। प्रणव (ओऽम् अर्थात् ॐ) ईश्वर का वाचक है (तस्य वाचकः प्रणवः)। जो ईश्वर का ध्यान करता है वह उसकी कृपा से योग की अंतिम अवस्था 'असंप्रज्ञात समाधि' को प्राप्त करता है। ईश्वरानुग्रह से चित्त की एकाग्रता में बाधक व्याधि आदि अन्तराय स्वतः नष्ट हो जाते हैं।

→ योग दर्शन में ईश्वर के अस्तित्व के संबंध में जो युक्तियाँ दी गई हैं, वे निम्नलिखित हैं :—

(i) वेदों के अनुसार ईश्वर का अस्तित्व है।

(ii) निरन्तरता का नियम भी यही बतलाता है कि ज्ञान और पूर्णता की एक सर्वोच्च सीमा होना चाहिये, जो ईश्वर है।

Scanned with CamScanner

(iii) पुरुष और प्रकृति के योग और विच्छेद के लिये यह आवश्यक है कि ईश्वर हो।

(iv) ध्यान और योग और उससे कैवल्य प्राप्त करने के लिये भी ईश्वर की भक्ति सर्वोच्च मार्ग है।

⇒ किन्तु, योग दर्शन ईश्वर को स्रष्टा, पालनकर्ता या संहारक नहीं मानता। वह एक ~~पुरुष~~ विशेष पुरुषमात्र है। वह दण्डित या पुरस्कृत नहीं करता। असंख्य पुरुष (ब्रह्म) और प्रकृति, जो नित्य और निरपेक्ष हैं, ईश्वर को सीमित करते हैं। ईश्वर बन्धन और मुक्ति के लिये प्रत्यक्षतः जिम्मेवार नहीं है। उसका कार्य अपने भक्तों के समाधि-पथ में आनेवाले विघ्नों को दूर करके समाधि-सिद्धि को संभव बना देना है। मुक्त पुरुष से भी ईश्वर का कोई सहज घनिष्ठ संबंध नहीं है। मोक्ष कैवल्य है जिसमें सामीप्य, सारूप्य या सायुज्य की कोई प्रतिष्ठा नहीं है।

⇒ इस प्रकार योग दर्शन में ईश्वर की यह व्याख्या सेश्वर सांख्य प्रणाली में एक विदेशी तत्त्व सा प्रतीत होती है। यह एक, मानो, प्रणाली ~~से बाह~~ के बाहर से उसकी आन्तरिक कठिनाई को हल करने के लिये, कृत्रिम युक्ति निकाली गई है जो उसके ढाँचे से मेल नहीं खाता।

Scanned with CamScanner